## जंगली आहार



**उपर:** स्लो फ़ूड उत्सव, 2015 में मेघालय में मनाये गए स्थानीय तेरा मादरे समारोह का एक अहम हिस्सा था। यहाँ उत्तर-पूर्व और विश्व भर के विभिन्न समुदायों ने 40 से अधिक स्थानीय आहार के स्टाल्स लगाये थे। यह खाद्य विविधता और ज्ञान सम्पदा का उत्सव था। उपर पश्चिम खासी हिल्स के डोमबाह गाँव के लोगों द्वारा लगायी स्टाल की तस्वीर है।



**ऊपर**: घोंघे - जंगली आहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इन्हें मेघालय के स्थानीय तेरा मादरे आहार उत्सव में प्रदर्शित किया गया है।

जंगली या बिना-उगाये आहार में अनेक प्रकार के पौधे शामिल हैं। इनमें पेड़-पौधों की टहनियां, पित्तयां, फल-फूल, सब्जियां, जड़ें, कंदमूल, और अन्य जीव जैसे मशरूम्स और कीड़े-मकोड़े भी शामिल हैं! ये आहार स्वादिष्ट, पौष्टिक और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ, कड़क सर्दी और अकाल में लोगों के जीवन का साधन भी बनते हैं। पारंपरिक वैद्य इन जंगली आहारों को बीमारियों के इलाज में उपयोग करते हैं।



**उपर:** बच्चे "क्यु" की फसल ले जा रहे हैं। इसे लद्दाख के जंगली इलाकों से काटा गया है।



**उपर:** डेक्कन डेवलपमेंट सोसाइटी, तेलन्गाना की दलित महिलाओं द्वारा स्थानीय जंगली आहारो का मूल्यांकन और प्रदर्शन



बाएं: मुनिगुड़ा रेलवे स्टेशन पर बिकते जंगली-मशरूम्स। इन्हें डोंगरिया- कोंध जनजाति की महिलायों ने इकट्ठा किया है। ये उडीषा राज्य के नियमगिरि इलाके में रहती हैं।

दाएँ: "सुदिनिया" (Clerodendrum colebrookianum) के पत्ते और फल उच्च रक्तचाप के रोग में लाभकारी हैं। इन्हें, नागालैंड की चिज़ामी जनजाति ने, 2014 में दिल्ली में आयोजित जंगली आहार और पर्यावरण मेले में प्रदर्शित किया।

